Sem-1 sec unit-1

1.अनवुाद का अर्थ एवं परिभाषा

2 अनवुाद के प्रकार

3 अनवुाद का महत्व एवं क्षेत्र

अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार

अनुवाद का अर्थ- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति 'अनु' उपसर्ग के साथ 'वाद' शब्द के साथ संयुक्त होने से होती है। 'अनु' जिन अर्थों में अन्य शब्दों के साथ सम्बन्धित होकर अपने स्वरूप परिवेश में परिवर्तन प्राप्त कर लेता है, कभी वह 'पश्चात या पीछे का ज्ञान कराता है, जैसे अनुचर, 'सदृश' का ज्ञान 'अनुरूप' में कराता है, इसी प्रकार वह 'प्रत्येक', 'बारम्बार' आदि का द्योतक भी है। 'अनुवाद' में वह 'सदृश अर्थसंपृक्त' से प्रयोजन प्रकट करता है। सदृशं अर्थ संपृक्तता ही उसका स्वरूप है। जब से दो भाषा बोलियों वाले लोग पारस्परिक सम्पर्क में आने लगे, इसकी उत्पत्ति तभी से हुई। इसका प्रचलन संस्कृत में आरम्भ हुआ था। विभिन्न भाषा-भाषी इस शब्द के समानार्थक इन शब्दों का भी प्रयोग करते हैं- असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, उड़िया, सिन्धी भाषाओं में 'अनुवाद शब्द के रूपान्तर नहीं पाये जाते, जबकि कश्मीरी भाषा में इसे 'तर्जमा', मराठी में 'भाषान्तर', मलयालम में 'विवर्तन' तमिल में 'योषिपेययुं', तेलगू में 'अनुवाद' तथा उर्दू में 'तर्जमा' कहते हैं। उर्दू के प्रभाव से मलयालम में इसे मलयालम, बेंगला तथा सिंधी में क्रमशः 'तर्जुया', 'तर्जया', तथा 'तर्जया' भी कहा जाता है। साधारणतया सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद शब्द का प्रचलन है।

परिभाषा –

जी. सी. कैटफोर्ड –

> 'किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्य-सामग्री को किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी रूप में रूपान्तरित करना अनुवाद है।'

पाश्चात्य विद्वान् निदा (NIDA)

> स्रोत भाषा में अभिव्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा में अर्थ और शैली के स्तर पर यथासम्भव सहज और समान स्तर पर अभिव्यक्ति देने का नाम अनुवाद है।'

फारस्टन

> 'एक भाषा में अभिव्यक्त पाठ के भाव की रक्षा करते हुए-जो सदैव सम्भव नहीं होता दूसरी भाषा में उसे उतारने का नाम अनुवाद है।'

इन परिभाषाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि "किसी एक भाषा में अभिव्यक्त विचारों को यथासम्भव तद्वत् अथवा निकटतम रूप में दूसरी भाषा में सहज भाव से प्रस्तुत करने की चेष्टा अनुवाद है।"

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के बहुत से प्रकार या भेद हैं, परन्तु इनके विशेष आधार हैं-

(1) सीमा, (2) भाषिक स्तर, (3) श्रेणी या पदक्रम |

(1) सीमा के आधार पर- इस आधार पर अनुवाद के दो भेद किए जा हैं—(क) पूर्ण अनुवाद (Full translation), (ख) आंशिक अनुवाद (Partial translation) ।

(क) पूर्ण अनुवाद- पुर्ण अनुवाद में सम्पूर्ण अनुद्य सामग्री का अनुवाद किया जाता है। स्रोत-भाषा के पाठ को उसके पूर्णरूप में भाषान्तरित किया जाता है।

(ख) आंशिक अनुवाद- आंशिक अनुवाद में स्त्रोत-भाषा की पाठ-सामग्री के कुछ अंशों को त्याग भी दिया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में विलास के तारतम्य को बनाये रखना अभीष्ट होता है। परन्तु ऐसा करने में स्थानिक विशेषता वाले पाठों को छोड़ना उचित नहीं होता। साहित्यिक अनुवाद में प्रायः ऐसा किया जाता है।

(2) विधा के आधार पर विधा के आधार पर अनुवाद के भेद इस प्रकार हैं-

(क) काव्यानुवाद – यों तो प्रायः काव्य का अनुवाद काव्य में ही किया जाता है। हिन्दी में संस्कृत काव्यों को काव्य में अनूदित करने की एक समृद्ध परम्परा रही है। भारतेन्दु युग में लाला सीताराम ने कालिदास के 'रघुवंश' का अनुवाद दोहा-चौपाइयों में किया। श्रीधर पाठक ने कालिदास के 'ऋतुसंहार' का अनुवाद ब्रजभाषा के सवैया छन्द में किया। यह लगातार कहा जाता रहा है कि काव्यानुवाद हो ही नहीं सकता, किन्तु ऐसा लगता है कि अनुवादकों ने इस कथन की कभी परवाह नहीं की। प्राचीन परम्परा से इस बात के पर्याप्त प्रमाण दिए जा सकते हैं कि काव्यानुवाद बड़ी लगन से किए जाते रहे हैं। यह काव्यानुवाद निबद्ध तथा अनिबद्ध काव्य के दोनों रूपों का हुआ है। यूनानी कवि होमर के विकसनशील 'महाकाव्य 'इलियट' के विश्वभर में अनेक काव्यानुवाद हुए हैं।

(ख) नाट्यानुवाद – विश्व भर में नाट्यानुवाद की एक समृद्ध परम्परा दृष्टिगत होती है। हिन्दी में गोपीनाथ एम. ए. ने सन् 1950 में शेक्सपियर के तीन नाटकों के हिन्दी में अनुवाद किए। उन्होंने 'Romeo and Juliet' का 'प्रेमलीला' नाम से 'As You Like It' तथा 'Merchant of Venice' का नये नामों से अनुवाद किया। मथुरा प्रसाद चौधरी ने 'मैकबेथ' का 'साहसेन्द्र साहस' नाम से अनुवाद किया। कवि बच्चन तथा अमृतराय ने 'हेमलेट' तथा 'मैकबेथ' का अनुवाद किया। कवि रघुवीर सहाय ने 'मैकबेथ' का पुनः 'बरनम वन' नाम से अनुवाद किया है।

स्वयं भारतेन्दु ने संस्कृत के 'मुद्राराक्षस' का तथा राजा लक्ष्मणसिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' का हिन्दी में अनुवाद किया। फिलहाल ही हबीब तनवीर ने 'मृच्छ कटिकम्' का 'मिट्टी की गाड़ी' के रूप में अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त नाट्य रूपान्तर (कहानी-उपन्यासादि के) इस दौर में अत्यधिक लोकप्रिय हुए हैं, जैसे विष्णु प्रभाकर द्वारा 'गोदान' का 'होरी' नाम से नाट्य रूपान्तर।

नाटक का सम्बन्ध रंगमंच से होने के कारण इस तरह के अनुवादों में अनेक प्रकार की व्यावहारिक कठिनाइयां सामने आती हैं। इसलिये इन्हें 'अनुवाद श्रेणी' में रखना, अनुवाद के क्षेत्र को बढ़ाना मात्र लगता है। नाट्य

रूपान्तरकार का रंगमंच से जुड़ा होना अत्यन्त आवश्यक होता है। रंगमंच के व्यावहारिक ज्ञान के बिना नाट्यानुवाद सफलता से किया ही नहीं जा सकता। अतः इसे अनुवाद विधा से मुक्त रूपान्तर विधा ही कहना अधिक उपयुक्त होगा।

(ग) कथानुवाद-कथा- साहित्य के अन्तर्गत उपन्यास-कहाँनी आदि को स्थान दिया जाता है। कहानियों तथा उपन्यासों का अनुवाद् काव्यानुवाद की तुलना में काफी सरल होता है। साथ ही ये अनुवाद ज्यादा प्रचलित एवं लोकप्रिय भी हैं। टॉलस्टाय उपन्यास 'War and Peace' के अनेक भाषाओं में हुए अनुवाद काफी लोकप्रिय हुए हैं। अज्ञेय ने जैनेन्द्र के प्रख्यात उपन्यास 'त्यागपत्र' का अंग्रेजी में 'The Resignation' नाम से सफल अनुवाद किया है। हिन्दी में भारतीय भाषाओं के हजारों उपन्यास सफलता से अनूदित हुए हैं। संस्कृत की कहानियों – 'पंचतन्त्र' या 'कथा-सरित्सागर' के विदेशी भाषाओं में सैकड़ों अनुवाद हुए

(घ) अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद- निबन्ध, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण आदि के अनुवाद बहुत समय से प्रचलित हैं। स्वयं आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने बेकन के निबन्धों का अनुवाद 'बेकन विचाश्चालवली' के नाम से हिन्दी में किया। गांधीजी की 'आत्मकथा' के अनेक भारतीय भाषाओं में अच्छे अनुवाद किए गए हैं।

(4) विषय के आधार पर विषय के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद हैं-

(क) ललित साहित्य का अनुवाद।

(ख) धार्मिक पौराणिक साहित्य का अनुवाद।

(ग) साहित्यिक साहित्य का अनुवाद।

(घ) गणित का अनुवाद।

(च) प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद।

(छ) अभिलेखों, गजेटियरों आदि का अनुवाद।

(ज) पत्रकारिता से सम्बन्धित विषयों का अनुवाद।

(झ) समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद।

(ट) काव्यशास्त्र तथा भाषा-वैज्ञानिक विषयों से सम्बन्धित अनुवाद |

(3) अनुवाद – प्रकृति के आधार पर – अनुवाद-प्रकृति के आधार पर भी अनेक भेद-प्रभेद किए जा सकते है-

(क) शब्दानुवाद् – प्रायः शब्दानुवाद और शब्दशः अनुवाद को एक मानने की भूल हो जाती है। स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि शब्दानुवाद मैं स्रोत-भाषा के प्रत्येक शब्द पर अनुवादक को ध्यान रखना पड़ता है, लेकिन शब्दशः अनुवाद में शब्द के स्तर पर क्रमबद्ध अनुवाद की ओर ध्यान दिया जाता है। शब्दानुवाद का तात्पर्य यह भी नहीं है कि स्रोत-भाषा की वाक्य-व्यंजना के ढंग से लक्ष्य-भाषा की वाक्य-व्यंजना की जाए। तात्पर्य यह है कि मूलपाठ में कही गई प्रत्येक बात को लक्ष्य-भाषा में ढंग से अन्तरित किया जाए। गणित, विधि जैसे विषयों में ऐसा अनुवाद आवश्यक होता है, क्योंकि वहाँ 'कुछ भी छूट जाने' या 'कुछ जोड़ दिये जाने से' भयंकर भूलें हो जाती हैं। शब्दानुवाद करते समय अनुवाद क्रिया में उसकी स्वाभाविक आत्मा की जो भाषा, प्रवाह के रूप में विद्यमान रहती है, तिरस्कार नहीं करना

चाहिए। इस प्रकार की गलतियाँ अनुवाद को हास्यास्पद बना देती हैं। स्रोत-भाषा की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थ-ध्वनियों और भाव की विशिष्ट भंगिमाओं को पकड़ने में अनुवादक जब असमर्थ होता है तो उससे यह गलती हो जाती है और स्रोत-भाषा का मूलार्थ अपनी अनुगूंज में लक्ष्य-भाषा में गड़बुड़ा जाता है। ऐसी स्थिति में व्यंजना प्रधान सामग्री का अनुवाद करना प्रायः कठिन होता है। शब्दानुवाद करते समय अनुवादक लक्ष्यार्थ और व्यग्यार्थ के स्तरों को नहीं पकड़ पाता। ऐसा अनुवाद अर्थविहीन हो जाता है। जैसे He prefers dying to living का अनुवाद 'वह जिन्दगी के बजाय मौत पसन्द करता है बड़ा ही अटपटा और बेढंगा लगता है, इसके बजाय इसका अनुवाद यदि यह कहा जाए कि 'वह जीने के बजाय मरना बेहतर समझता है अधिक उचित प्रतीत होता है।

(ख) भावानुवाद – भावानुवाद में अनुवादक भाव, विचार और अर्थ पर अधिक ध्यान देता है और वह पूरी शक्ति से उसी को लक्ष्य भाषा में अन्तरित करने का प्रयास करता है। भाषा के पद और वाक्यों पर अधिक ध्यान न देने के कारण यह अर्थ-विज्ञान के अधिक निकट होता है। स्रोत-भाषा की पाठ-सामग्री के सम्पूर्ण अर्थ को लाने का प्रयास करता है इसलिए इनमें स्त्रोत-भाषा की आत्मा प्रायः सुरक्षित रहती है।

भावानुवाद कई प्रकार का होता है। कभी-कभी स्त्रोत-भाषा की पाठ-सामग्री का शब्दानुवाद अत्यन्त जटिल प्रक्रिया में फँसा होता है, ऐसी स्थिति में भावानुवाद करना उपयुक्त होता है। भावानुवाद में स्त्रोत-भाषा की शारीरिक योजना नहीं रहती अतः अनुवाद मुक्त दिखाई देता है, परन्तु ऐसे अनुवाद में सृजनात्मकता आ जाती है। इस प्रकार भावानुवाद एक सृजनात्मक कार्य है, जो अनुवादक की मौलिकता से मौलिक रचना की तरह का रचनात्मक आनन्द प्राप्त कराता है।

विद्वान लोग भावानुवाद का यह दोष मानते हैं कि उसमें अनुवादक अपनी भाव-सम्पदा, विचार-सम्पदा तथा शैली से पाठक को आक्रान्त कर लेता है, परन्तु यह अत्यन्त असंगत तर्क है क्योंकि भावानुवाद दूसरी भाषा के महत्वपूर्ण विचारों और अभिव्यंजनाओं को अपनी भाषा में लाकर दोनों भाषाओं को सम्मान भी देता है तथा मूल लेखक की सृजनात्मकता को भी समृद्ध करता है। साहित्य के अनुवाद में यह सर्वाधिक उपयोगी पद्धति है।

(ग) छायानुवाद– 'छाया' संस्कृत का बहुत पुराना शब्द है और इसका प्रयोग नाटकों में यत्र-तत्र दृष्टिगत होता है। संस्कृत पाठ की छाया जब हिन्दी पाठ पर दृष्टिगत होती है तो उसे छायानुवाद कहा जाता है, जैसे अवन्ति वर्मा का यह श्लोक देखिए-

'दुःसहतापभयादिव सम्प्रति मध्यस्थिते दिवसानके।

छायामिव वाछन्ती छायापि गता तरुलतानि।।'

इसका छायानुवाद बिहारी के दोहे में इस प्रकार मिलता है-

'बैठि रही अतिसघन वन पैठि सदन तन माँह।

निरखि दुपहरी जेठ की छाहो चाहति छाँह ॥'

विदेशी कृतियों की प्रविधि और छाया को लेकर जो रचनाएं की जाती हैं उनमें भी एक प्रकार का छायानुवाद रहता है। जैसे अज्ञेयजी के 'नदी के द्वीप' पर डी. एच. लारेन्स के Lady Chattergis's Lover की धुंधली छाया दृष्टिगत होती है। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर 'ताइस' की छाया या प्रेमचन्द के 'रंगभूमि' पर थैकरे के 'Vanity Fair' की छाया। कभी-कभार लेखक विशेष की कुछ पंक्तियों पर देशी-विदेशी लेखक की छाया दृष्टिगत होती है। पन्तजी की पंक्ति है— 'सिखा दो ना हे मधुपकुमारि मुझे भी अपने 'मीठे गान' (Teach me half of the gladness that they brains must know) ।

(घ) रूपान्तरण – अनुवादक इसमें कृति का रूप बदल देता है। इसीलिए इसे रूपान्तरण (Adaptation) कहा जाता है। प्रायः इसमें विधा परिवर्तन होता है। उपन्यास या कहानी को नाटक में बदल दिया जाता है। सुविधा के अनुसार पात्र और काल-योजना में भी हेर-फेर हो सकता है। शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'Othello' का हिन्दी में उपन्यासपरक रूपान्तर शत्रुघ्नलाल शुक्ल ने किया। यह रूपान्तर एक ही भाषा में विधागत परिवर्तन के रूप में हो सकता है। शेक्सपियर के नाटकों को चार्ली लैम्ब ने Tales from Shakespeare' में कहानियों के रूप में रूपान्तरित किया है।

(ङ) सारानुवाद – इस प्रकार के अनुवाद में स्त्रोत-भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में सारांश प्रस्तुत किया जाता है। लम्बे भाषणों, राजनीतिक वार्ताओं आदि में दुभाषिये इस प्रकार की अनुवाद-पद्धति का ही सहारा लेते हैं। इसमें आवश्यकता इस बात की है जो कि जो बातें स्त्रोत-भाषा में कही गई हैं उनका मुख्यार्थ उपेक्षित न हो।

(च) भाषा या टीकापरक अनुवाद- अनुवाद की इस पद्धति में स्रोत-भाषा के मूल की व्याख्या के साथ अनुवाद किया जाता है। इसमें काव्य स्पष्टीकरण के लिए भाष्यकार अपनी ओर से उद्धरण, उदाहरण और प्रमाण जोड़ सकता है। भाष्यकार अपने व्यक्तित्व की महत्ता को अर्जित ज्ञान के माध्यम से उस पर स्थापित करता है। जैसे आचार्य विश्वेश्वर की 'हिन्दी अभिनव भारती', 'हिन्दी ध्वन्यावलोकलोचन' आदि की वैदुष्यपूर्ण व्याख्याएँ या संस्कृत की काव्यशास्त्रीय रचना 'साहित्य-दर्पण' पर डॉ. सत्यव्रत सिंह की व्याख्या गीता पर बाल गंगाधर तिलक का 'गीता-भाष्य'। इसमें समालोचना तत्व का भी सम्मिश्रण हो जाता है। वेदों और उपनिषदों के अनेकानेक भाष्य इसी मनीषी परम्परा में होते रहे हैं। आज भी यह परम्परा समाप्त नहीं हुई है।

(छ) आशु अनुवाद – आशु अनुवाद का प्रचलन तो मनुष्य के इस विश्व में आविर्भाव के साथ हुआ है, क्योंकि यही विभिन्न भाषा बोलियों वाले मनुष्यों के बीच संक्रमण तथा संप्रेक्षण का प्रचलित रूप है। आज तो इसका महत्व और भी अधिक हो गया है क्योंकि वर्तमान युग में देश-विदेश के सामान्य लोगों का भी परस्पर मिलना-जुलना अधिक सहज हो चला है और ऐसे विभिन्न भाषी लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम दुभाषिए करते हैं। उन्हें दोनों की बातों का आशु अनुवाद करना पड़ता है। आशुं अनुवादक का भाषा-ज्ञान गहन एवं अत्यन्त प्रामाणिक होना चाहिए। तमाम महत्वपूर्ण भाषाओं वार्ताओं, अनुबन्धों आदि का अनुवाद उसे कोश या सन्दर्भ ग्रन्थों की सहायता के बिना आमने-सामने करना पड़ता है। इस दृष्टि से भाषा ही नहीं, दोनों देशों के इतिहास और संस्कृति तथा समाज से गहरे परिचय की अपेक्षा की जाती है। उसकी छोटी-सी भूल कभी बहुत भारी पड़ सकती है। इस प्रकार के अनुवाद का एक विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व भी है। राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में युद्ध हो या शान्ति, आशु अनुवादक के बिना काम नहीं चलता।

कासाग्रॉदे नामक पश्चिमी विद्वान ने अनुवाद के निम्नवत् चार भेद माने हैं-

(i) भाषापुरक अनुवाद – स्त्रोत भाषा के मूल कथ्य का लक्ष्य भाषा में रूपान्तरण भाषापरक अनुवाद है।

(ii) तथ्यपरक अनुवाद — स्रोत-भाषा में व्यक्त तथ्यों की लक्ष्य-भाषा की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुति तथ्यपरक अनुवाद है। वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य का अनुवाद इसी भेद के अन्तर्गत है।

(iii) संस्कृतिपरक अनुवाद – स्रोत-भाषा में अभिव्यक्त धार्मिक, आध्यात्मिक और योगपरक तथ्यों-विचारों की लक्ष्य भाषा में प्रस्तुति संस्कृतिपरक अनुवाद है।

(iv) सौन्दर्यपरक अनुवाद – साहित्य संगीत तथा अन्योन्य ललित कलाओं का स्रोत-भाषा -भाषा से लक्ष्य-भाषा में अनुवाद सौन्दर्यपरक अनुवाद कहलाता है।

अनुवाद का कार्य (Work of translation)

अनुवाद का कार्य व्यापारियों द्वारा नए स्थानों की यात्रा करने के लिए और उस क्षेत्र के लोगों के साथ बातचीत करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। हर कोई ज्ञान या जानकारी का भंडार है तथा किसी की भावनाओं, विचारों, राय, कुछ तथ्यों को आम जनता के साथ व्यक्तकरने के लिए मशीन अनुवाद द्वारा सुलभ बना सकते हैं। भारतीय संदर्भ में, अनुवाद पाली, प्राकृत, देवनागरी और अन्य क्षेत्राीय भाषाओं में पवित्रा ग्रंथों के अनुवाद के साथ शुरू हुआ। यह दुनिया भर में नैतिक मूल्यों, लोकाचार, परंपरा, मान्यताओं और संस्कृति के संचारण करने में मदद करता है।

अनुवाद के क्षेत्र (Field of translation)

आज की दुनिया में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें अनुवाद की उपादेयता को सिद्ध न किया जा सके। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आधुनिक युग के जितने भी क्षेत्र हैं सबके सब अनुवाद के भी क्षेत्र हैं, चाहे न्यायालय हो या कार्यालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, संचार हो या पत्रकारिता, साहित्य का हो या सांस्कृतिक सम्बन्ध। इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही देखा-परखा जा सकता है।

1. न्यायालय : अदालतों की भाषा प्राय: अंग्रेजी में होती है। इनमें मुकद्दमों के लिए आवश्यक कागजात अक्सर प्रादेशिक भाषा में होते हैं, किन्तु पैरवी अंग्रेजी में ही होती है। इस वातावरण में अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषा का बारी-बारी से परस्पर अनुवाद किया जाता है।

2. सरकारी कार्यालय :आज़ादी से पूर्व हमारे सरकारी कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी थी। हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने के साथ ही सरकारी कार्यालयों के अंग्रेजी दस्तावेजों का हिन्दी अनुवाद ज़रूरी हो गया। इसी के मद्देनज़र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा प्रकोष्ठ की स्थापना कर अंगे्रजी दस्तावेज़ों का अनुवाद तेजी से हो रहा है।

3. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी : देश-विदेश में हो रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के गहन अनुसंधान के क्षेत्र में तो सारा लेखन-कार्य उन्हीं की अपनी भाषा में किया जा रहा है। इस अनुसंधान को विश्व पटल पर रखने के लिए अनुवाद ही एक मात्र साधन है। इसके माध्यम से नई खोजों को आसानी से सबों तक पहुँचाया जा सकता है। इस दृष्टि से शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

4. शिक्षा : भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के शिक्षा-क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका को कौन नकार सकता है। देश की प्रगति के लिए परिचयात्मक साहित्य, ज्ञानात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद बहुत ज़रूरी है। आधुनिक युग में विज्ञान, समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र, भौतिकी, गणित आदि विषय की पाठ्य-सामग्री अधिकतर अंग्रेजी में लिखी जाती है। हिन्दी प्रदेशों के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इन सब ज्ञानात्मक अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद तो हो ही रहा है, अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी इस ज्ञान-सम्पदा को रूपान्तरित किया जा रहा है।

5. जनसंचार : जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य होता है। इनमें मुख्य हैं समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन। ये अत्यन्त लोकप्रिय हैं और हर भाषा-प्रदेश में इनका प्रचार बढ़ रहा है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में समाचार प्रसारित होते हैं। इनमें प्रतिदिन 22 भाषाओं में खबरें प्रसारित होती हैं। इनकी तैयारी अनुवादकों द्वारा की जाती है।

6. साहित्य : साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद वरदान साबित हो चुका है। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का परिचय दूरदराज के पाठक अनुवाद के माध्यम से पाते हैं। 'भारतीय साहित्य' की परिकल्पना अनुवाद के माध्यम से ही संभव

हुई है। विश्व-साहित्य का परिचय भी हम अनुवाद के माध्यम से ही पाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद के कार्य ने साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को सुगम बना दिया है।

7. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनुवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवादक की सहायता से ही होता है। प्राय: सभी देशों में एक दूसरे देशों के राजदूत रहते हैं और उनके कार्यालय भी होते हैं। राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है। फिर भी देशों के प्रमुख प्रतिनिधि अपने विचार अपनी ही भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुवाद की व्यवस्था होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री एवं शान्ति को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

8. संस्कृति : अनुवाद को 'सांस्कृतिक सेतु' कहा गया है। मानव-मानव को एक दूसरे के निकट लाने में, मानव जीवन को अधिक सुखी और सम्पन्न बनाने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'भाषाओं की अनेकता' मनुष्य को एक दूसरे से अलग ही नहीं करती, उसे कमजोर, ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य भी बनाती है। 'विश्वबंधुत्व की स्थापना' एवं 'राष्ट्रीय एकता' को बरकरार रखने की दृष्टि से अनुवाद एक तरह से सांस्कृतिक सेतु की तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हर भाषा की अपनी संरचनात्मक व्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा होती है। इसके साथ-साथ विभिन्न प्रयोजनों में प्रयुक्त होने के कारण उसका अपना स्वरूप भी होता है। यही कारण है कि अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा की समतुल्यता के बदले उसका न्यूनानुवाद या अधिअनुवाद ही हो पाता है। अनुवाद के व्यावहारिक पहलु को जानने के लिए अनुवाद-प्रक्रिया को समझना जरूरी है।